सर्वोदय समाज सम्मेलन,जौरा के विषय पर पी.व्ही. राजगोपाल जी का विशेष साक्षात्कार...

ग्वालियर। बागीसमर्पण की 50 वी स्वर्ण जयंती के अवसर पर जौरा, मुरैना में प्रस्तावित सर्वोदय समाज सम्मेलन (14–16 अप्रेल 2022) जो कि रद्द कर दिया गया था, के संदर्भ में सर्वोदय समाज के राष्ट्रीय संयोजक आदरणीय पी.व्ही. राजगोपाल जी के साथ रबीन्द्र सक्सैना से विशेष चर्चा हुई जिसमें उन्होने सर्वोदय समाज सम्मेलन के संदर्भ में अपनी सीधी बात रखी।

सवाल – राजा जी अभी कुछ ही दिन पहिले बागी आत्मसर्मपण स्वर्ण जयंती समारोह का बहुत शानदार आयोजन हुआ उसके लिये आपको बहुत–बहुत बधाई । इसी के साथ सर्वोदय समाज सम्मेलन प्रस्तावित था, लोग पूंछ रहे हैं सवोदय समाज सम्मेलन क्यों रद्द हुआ लोग आपसे जबाब चाहते हैं ?

– पहली बात यह समझ में आई कि जो कुछ प्रचार में है उसमें सच्चाई कम है क्योंकि यह कोई बाहर से किसी ने इस कार्यक्रम को रद्द नहीं किया। सर्वोदय समाज सम्मेलन के संयोजक होने के नाते मेने ही खुद रद्द किया, एक तो यह लोगों को जानना है।

सवाल – क्या ऐसा कारण था कि सम्मेलन को रद्द करना पड़ा ?

– क्यों रद्द किया, क्योंकि पहले सर्वसेवा संघ के सब लोग जौरा आए थे और हम लोगों की दो–तीन दिन की बैठक हुई और सारी बात हुई। बातचीत के दरम्यान यह सब कार्यक्रम तय हो गया था, कि दो कार्यक्रमों को अलग अलग करना है। एक तरफ हम बागी समर्पण का कार्यक्रम करेंगे और एक तरफ हम सर्वोदय समाज सम्मेलन करेंगे। यह साफ था सबके लिए कि बागीसमर्पण कार्यक्रम में केन्द्रीय कृषि मंत्री एवं यहां के सांसद जी आएंगे । इसलिए लोगों ने निवेदन किया इसको अलग–अलग कर लीजिए सुबह के सत्र को बागी समर्पण और स्थानीय सांसद जी का आगमन वगैरा कर लीजिए और दोपहर में हम लोग सम्मेलन करेंगे, सही में हुआ वही है उसमें कोई फर्क नहीं था जो हमने किया वही है। सुबह के समय में जैसा निर्धारित किया गया वैसा सब कुछ सर्वोदय समाज के राष्ट्रीय संयोजक के नाते मैंने इस

बात को गम्भीरता से लिया है कि सुबह सारे बागी लोग आएंगे उनको माननीय सांसद और मंत्री जी सम्मानित करेगें, और उसके बाद एक राजनीतिक सत्र होगा जिसमें चंबल घाटी के सारे मामलों को आगे ले जाने के लिए चंबल घाटी में जो शांति स्थापना हुई उसको आगे केसे ले जायेंगें और शांति को चम्बल घाटी से दुनिया में कैसे पहुंचायेंगे उस पर एक सत्र होगा।

और आपने देखा उस सत्र का उद्घाटन हमारे आनंद कुमार जी ने किया, उस सत्र में रघु ठाकुर ने बात किया, उस सत्र में मोहन प्रकाश जी कांग्रेस की ओर से बात किया, उस सत्र में समाजवादी पार्टी की ओर से हमारे राम प्रकाश जी ने बात रखा तो कई दलों के लोग उस मंच पर थे और सभी ने अपनी बातों को रखा।

*राजनीतिक एक विचारधारा के बदले सभी विचारधारा के लोगों ने अपना व्यक्तव्य दिया जिसमें चंबल घाटी में शांति कायम हुई है । 50 वर्ष बाद उसे कैसे आगे ले जाना है इसलिए उसका नाम भी **50 इयर्स ऑफ़ बीऑन्ड** रखा गया, 50 साल और उसके आगे और उसके अनुसार लोगों ने किया । तो उसमें निर्णय के मुताबिक किया और इस सर्वोदय समाज के संयोजक के नाते इतना तो मुझे समझ है कि जो कुछ करना है एक लार्जर कम्युनिटी के साथ करना है, तो यह जो सब कुछ हुआ।*

लेकिन मैंने क्यों इस को निरस्त करने का तय किया क्योंकि जिस दिन मैं दिल्ली में था एक मीटिंग के लिए, मेरे ख्याल से 8 तारीख को उस दिन अचानक किसी ने इस मुद्दे को फिर उठाया कि मंत्री जी आ रहे हैं और मंत्री जी को नही आना चाहिये। मैं उस समय मीटिंग में था उनकी कॉन्फ्रेंस कॉल में भाग नही ले सका मुझे मालुम था कि वहां कितने लोग बैठे हैं जिनको पहिले से ही पता है कि मंत्रीजी आयेगें। किसी को कोई दिक्कत नही, मंत्री जी को हम स्वागत करेंगे लेकिन वह सत्र और बाकी सत्र में भिन्नता होगी।

जब शाम में मालूम पड़ा इस प्रकार के सवाल फिर उठाए जा रहे हैं उसका सिर्फ यह मतलब है कि जो लोग इस निर्णय की प्रक्रिया में शामिल नहीं थे जोरा में, जब चंदन पाल जी, अशोकशरण जी सब साथी लोग आए हुए थे सभी लोग थे और दो दिन साथ-साथ रहे और सारी चर्चायें हुई और निर्णय हुए, इस निर्णय प्रक्रिया में जो लोग शामिल नहीं थे, निर्णय प्रक्रिया में उनके शामिल होने की जरूरत नहीं थी ऐसे लोग इस सवाल को उठा रहे थे और समझ-बूझ कर उठा रहे थे।

मुझे मालूम हुआ कि किस प्रकार यह सम्मेलन को नुकसान पहुंचाने की कोशिश है स्वभाविक रुप से जब रात को मैं जौरा वापस आया, जौरा में चंदन पाल जी जो कि सर्व सेवा संघ के अध्यक्ष हैं,संतोष द्विवेदी जी जो मेरे साथ सर्वोदय समाज के सह संयोजक हैं, और हमारे गौरंग महापात्रा जी सर्व सेवा संघ के सचिव हैं से बात किया, संतोष द्विवेदी जी बार-बार आग्रह कर रहे थे कि केन्सल न करें हम लोग प्रोग्राम निर्धारित तरीके से कर रहे हैं, तब उसमें कैंसिल करने की कोई जरूरत नहीं है । चंदन पाल जी भी और गौरंग महापात्र जी भी आग्रह कर रहे थे कि हो सकता हे तो किया जाय। मुझे लगा कि कुछ लोगों के लिए यह प्रक्रिया अच्छा नहीं लग रहा है कि इतना सब निर्णय होने के बाद, इतना सब व्यवस्था होने के बाद, इतने सारे धन संग्रह का निर्णय होने के बाद, इतनी सारी तकलीफ उठाने के बाद, इतनी सारी व्यवस्थाओं को आगे बढ़ाने के बाद भी अगर कुछ लोगों ने यह सोचा है कि दुष्प्रचार से इस सम्मेलन को होने न दिया जाये तो मुझे लगा कि इस समय इसे केंसल करना

ही उचित है, क्योंकि मेरी आवश्यकता वहां युवाओं को बुलाना था, मेरी आवयश्यकता दस्युसर्मपण के 50 वर्ष मनाने का था, लेकिन सर्वोदय समाज के संयोजक के नाते मेने सोचा इस वक्त सर्वोदय समाज का सम्मेलन भी किया जाये, क्यों कि बागी समर्पण का काम सर्वोदय समाज का बहुत बड़ा काम है उस दृष्टि से सर्वोदय के काम का जो क्रेडिट सबको मिलकर लेना चाहिये।
लेकिन मुझे लगा कि कुछ लोगों को यह रास नही आ रहा है तो फिर मेने ही केंसल किया।
इसलिये जो प्रचार है हम लोगों ने इसलिए कैंसल किया कि निर्णय के विपरीत हो रहा था वगैरहा– वगैरहा यह बिल्कुल गलत प्रचार है किसी और ने केंसल नही किया है, किसी ओर को कैंसिल करने का अधिकार भी नहीं था संयोजक होने के नाते मेरी जिम्मेदारी है कि चलाना है या नहीं चलाना है और कैंसिल करना किसी और के बस की बात भी नहीं थी उस समय ।

सवाल – राजा जी प्रस्तावित सर्वोदय समाज सम्मेलन को आपके निर्णय से रद्द कर दिया गया जैसा कि आपने बताया है, लोग जानना चाहते हैं कि इसमें कोई कन्ट्रोवर्सी जैसा तो नही था ?

– मैंने यह स्वयं सोचा कि एक अच्छा सम्मेलन करना आवश्यक है कोई किसी प्रकार की कन्ट्रोवर्सी खड़ा करना आवश्यक नहीं है इसलिए मैं स्वयं सर्वोदय समाज के संयोजक होने के नाते इस सम्मेलन को इस सभा को केंसल किया। एक तो मैं साक्षात्कार में यह साफ करना चाहता हूं दूसरे लोगों ने इसे केंसिल नही किया, ना किसी को केंसिल करने का अधिकार दिया है । हमने स्वयं अपने विवेक से यह सोचा कि इस समय आवश्यकता युवाओं को जोड़ने का है, बागी समर्पण समारोह मनाने का है और आवश्यकता एक माहोल बनाने का है न कि आवश्यकता सवोदय समाज सम्मेलन में रुचि न रखने वाले कुछ लोगों को बुलाकर उनका आथित्य करने का नही है। इसलिये मेने उसको तय किया।

सवाल – राजा जी कुछ लोगों का कहना था कि किसान आंदोलन के साथ जो सरकार का रवैया रहा सभी को विदित है, आप उन्ही मंत्रीजी को आमंत्रित कर रहे हैं ?

– यह जो कहने वाले लोग हैं वह लोग किसान आंदोलन के समय क्या कर रहे थे जानना जरूरी है, जब किसान आंदोलन शुरू हुआ तो हम लोगों ने किसान आंदोलन के पक्ष में तिल्दा, रायपुर से यात्रा शुरू की, पूरे छत्तीसगढ़ को पार करके, मध्यप्रदेश को पार करते हुए यात्रा बढ़ी, उस यात्रा का स्वागत स्वयं संतोष द्विवेदी जी ने किया था उमरिया में, और सब जगह उस यात्रा का स्वागत हुआ। यात्रा को लेकर तनाव भी हुआ क्यों कि म.प्र. सरकार ने यात्रा को रोकने का पूरा–पूरा प्रयास किया।
फिर भी हम लोग यात्रा करके ग्वालियर आये, यात्रा शुरू करने के समर्थन में प्रेस कॉन्फ्रेंस की। और अगले दिन मुरैना से पैदल यात्रा शिरु की किसानों के समर्थन में।
अब सवाल है कि मंत्री जी के संसदीय क्षेत्र से किसने यात्रा की, एकता परिषद ने की। मंत्री जी के संसदीय क्षेत्र से मंत्री जी के विरोध में आवाज उठाना सबसे कठिन काम है,और वह काम एकता परिषद ने किया। एकता परिषद के लोगों ने मुरैना में एकत्रित होकर धौलपुर राजस्थान बॉर्डर पैदल चले एक सप्ताह चले किसानों के समर्थन में। उसके बाद उत्तर प्रदेश सरकार ने रोका तो हम सब जीप से यात्रा करके राजस्थान होकर फिर वहां पहुंचे।

अभी सवाल उठाने वाले लोगों में से कई लोग उस समय हमारे साथ–साथ किसानों के समर्थन में गए भी थे वहां जाकर मंच पर बैठे हुए थे, उन्हे समर्थन देकर आये थे। मैं और राजेन्द्र सिंह जी खासकर के किसानों के समर्थन में भाषण देकर और समर्थन देकर आये थे।

और यह दुनिया को पता है कि एकता परिषद ने किसान के समर्थन में सबसे बढ़ा यात्रा निकाला। लम्बी यात्रा निकाला और मंत्री जी के संसदीय क्षेत्र से यात्रा निकालकर चेलेंज किया, उस समय के पूरे मीडिया को उठाकर आप देखेंगें तो समझ में आयेगा। और दिल्ली में जाकर मंत्रीजी से संवाद किया कि किसानों की बात सुननी चाहिए और उनको ठीक से समझना चाहिए वगैरा–वगैरा।

इतना सब काम किसान आंदोलन के पक्ष में करने वाले एकता परिषद संगठन को या यह कहें कि मंत्रीजी को चेलेंज करने वाले संगठन को मंत्रीजी बैठक के लिए बुला रहे हैं, उनको सम्मान दे रहे हैं ।

उस समय यह लोग कहां थे जो अभी आलोचना कर रहे हैं क्यों नहीं पहुंच गए थे मुरैना में किसान के पक्ष में यात्रा निकालने। यह उनको समझना है कि हम संवाद भी करेंगे ,जरूरत पड़ने पर हम उनका विरोध भी करेंगे और यह प्रचार करने का कोशिश ना करें कि हमको मंत्री जी को खुशामद करने वाले संगठन हैं ।

एकता परिषद में इतना ताकत है कि हम चैलेंज भी कर सकते हैं संवाद भी। ऐसे ताकत रखने वाले संगठन बहुत कम है।

सवाल – राजाजी, क्या लोग जान सकते हैं कि केन्द्रीय मंत्री श्री नरेन्द्र सिंह तोमर जी के साथ आपका विशेष लगाव है ?

– हमारे मंत्री जी के साथ कोई विशेष लगाव नहीं है हमारी आवश्यकता है कि वह वहां के सांसद हैं वहां के समर्पण के बाद जो भी काम चलना है उसमें उनकी भूमिका है, और उस भूमिका के लिए हमेशा प्रेरित करते रहेंगे, उनको याद दिलाते रहेंगे और संवाद की प्रक्रिया भी चलाते रहेंगे।

जब वह केन्द्र में ग्रामीण विकास मंत्री थे तब 25000 लोग ग्वालियर में इकट्ठे हुए थे जमीन के मुद्दे को लेकर, ग्वालियर से मुरैना तक चले थे, मैं 2018 की बात कर रहा हूं 2018 में मंत्री जी के अनुनय विनय के बादजूद भी हम लोग वहां 25000 लोग इकट्ठे हुए वहां से चलकर मुरैना तक आए , क्योंकि ग्रामीण विकास मंत्री भूमि सुधार की बात आगे नहीं बढ़ा रहे थे।

लेकिन समझना है आलोचना वाले लोगों को इनको सिर्फ आलोचना करने में रुचि है इनको सिर्फ किसी के काम को कमजोर दिखाने में रुचि है तो वह अपना धंधा करते रहे उसमें कोई मुझे दिक्कत नहीं है इसलिए उनको रुचि है कि लोगों को कमजोर दिखाना है अपने आप को बढ़ा दिखाना है और उसके लिए अपने कलम दिनभर चलाना है तो चलाते रहे, हमे दिक्कत नहीं है, लेकिन सच्चाई जानना चाहते हैं सच्चाई के बारे में समझना चाहते हैं तो उनको 2018 के आंदोलन को समझना होगा जो नरेंद्र सिंह तोमर जी के विरोध में हमने लड़ा।

किसान आंदोलन के पक्ष में हमने जो किया था आंदोलन और संवाद दोनों की प्रक्रिया में लगे हैं और हम इसको मानते हैं कि गांधी जी का रास्ता है, विनोबा जी का रास्ता है, जयप्रकाश जी का रास्ता है इसके अलावा कोई ओर रास्ता समझ में आता है तो वह लोग खुद करें लेकिन जो काम करने वाले लोग हैं जो ग्रामीण लोगों को, असंगठित लोगों को, संगठित करने वाले लोग हैं उनको कमजोर दिखाने का जो कार्यक्रम है उसको

बंद करें ऐसा मै उनसे निवेदन करना चाहता हूं।

सवाल – राजाजी इस वार युवा केन्द्रित सम्मेलन क्यों किया ?

– इस पूरे सम्मेलन होने से पहले तय हो गया था। यह सवाल ही क्यों युवा केंद्रित सम्मेलन किया। इस बार तो मैंने पहले ही कहा मुझे इन लोगों ने सर्वोदय समाज सम्मेलन करने में नियुक्त किया तब मैंने कहा देखो मैं कोई भी भीड़–भड़ाका करने वाला संयोजक नहीं बन सकता अगर मेरे से संयोजन कराना चाहते हो क्योंकि मैंने मांगा नहीं, संयोजन की भूमिका आपने दिया है और मैं अपने ढंग से इसको करना चाहूंगा और अपने ढ़ग से करने का मतलब क्या है कि सर्वोदय में युवा लोगों को लाना है, और युवाओं को लाना है तो सम्मेलन ऐसे ही सबको मिलाकर खाली टूरिज्म करने का कोई मतलब नहीं है। तो मेने कहा बहुत व्यवस्थित रुप से हम जौरा में इसको करेगें ताकि समर्पण का 50 साल समारोह का लाभ उठायेगें हम लोग, क्योंकि वह सर्वोदय का काम था और 1000 युवाओं को देश भर से बुलाएंगे और उनको सबको सर्वोदय के सदस्य बनाएंगे ताकि हजार युवक पूरे देश में अचानक हमारे सदस्य होंगे, सर्वोदय के सदस्य होंगे और उन सब को टारगेट दिया जाएगा कि वह अपने–अपने स्टेट में जाएं । बड़ी संख्या में लोगों को सर्वोदय के सदस्य बनाए और सर्वोदय में जोड़ें क्योंकि सर्वोदय समाज में खादी वगैरह पहनना जरुरी नहीं है गांधी और अहिंसा पर विश्वास करने वाले लोग उसके साथ हो सकते हैं।
उस दृष्टि से हमारा एक बड़ा प्रयास था कि पूरे देश से 1000 लोग इक्ट्ठा करने का। उनके माध्यम से सर्वोदय विचार को मजबूत करने का और उसका माध्यम सर्वोदय समाज का मंच है तो हमने अपनी पूरी–पूरी ताकत लगाई हमने पूरे देश से हजार से ज्यादा युवाओं को बुलाया और सब लोगों को बहुत उम्मीद लेकर बड़े उत्साह के साथ वापस गए हैं।

सवाल – राजाजी क्या ऐसा नही लगता कि सम्मेलन रद्द होने से सवोदय समाज को नुकसान हुआ है ?

– हॉ, यह सर्वोदय समाज का नुकसान है, सर्वोदय आंदोलन का नुकसान है कि हमने उस पूरी प्रक्रिया को बागी समर्पण समारोह और युवा सम्मेलन तक ही केंद्रित रखना पड़ा और सर्वोदय समाज के सदस्य हो सकते थे सब लोग सर्वोदय आंदोलन के भाग वन सकते थे। यह नुकसान सर्वोदय संघ का है, यह नुकसान सर्वोदय समाज का है, नुकसान पूरे गांधीवादी सर्वोदय संगठन का है। और उसके लिए वह लोग जिममेदार हैं जिन लोगों ने दुष्प्रचार करके और दबाव बनाया और कुछ लोगों के ऊपर दबाब बनाया, मेरे ऊपर किसी ने दबाब नहीं बनाया और मैं किसी दवाब में काम भी नहीं करता सब को पता है कि मुझे सर्वोदय समाज का संयोजक बनाया है तो मैं उसको अपने हिसाब से करता हूं मैं कोई किसी के दबाव में इसको नहीं करता हूं उन्होंने बागी लोगों पर दबाव बनाने का कोशिश किया लिखा–पढ़ी करके और उल्टी सीधी बातें करके तो बागी लोग परेशान हुये तो मुझे लगा कि बागी लोगों को परेशान करने का कोई आवश्यकता नहीं है क्योंकि सर्वोदय के सदस्य बने न बने वह बाद में देखा जाएगा लेकिन अभी तो हमारे प्रयास हैं कि बागी समर्पण का 50 वर्ष मनाना है। इसलिये कार्यक्रम में कोई बाधा नहीं हुई गांधी आश्रम को कोई नुकसान नहीं हुआ,

बागी समर्पण समारोह को कोई नुक्सान नही हुआ, 1000 युवक जो आये उन्हे कोई नुकसान नहीं हुआ सब लोग बहुत प्रेरित होकर खुश होकर गए।

नुकसान हुआ आंदोलन को, आंदोलन के लिए सबलोग सहभागी हो सकते थे इस आंदोलन के झंडा लेकर यह लोग वापस जा सकते थे, आंदोलन के सदस्य बन सकते थे, उनको कुछ लोगों ने मुट्ठी भर लोगों ने जिसको गिना जा सकता है उंगलियों पर, उन लोगों ने अपने तौर तरीके के कारण होने नहीं दिया तो वह लोग खुश हो जाएं कि उनको लगता होगा कि हमने कुछ ऐसा प्रचार-प्रसार कर दिया जिससे सर्वोदय समाज सम्मेलन को हम लोग रोक पाए।

उन्हे यह समझना है कि इस प्रकार संगठन को अपने ही संगठन को नुकसान पहुंचाना अपने पैर पर कुल्हाड़ी मारने का कार्यक्रम है और यह कर-कर हम संगठन को नुकसान पहुंचा रहे हैं। कुछ लोग निरंतर अपने हाथ से अपने पैर में कुल्हाड़ी मार-मार के अपने लाभ के लिए, अपने फायदे के लिए व्यापक संगठनात्मक ताकत को खत्म कर रहे हैं,बढ़ने नहीं दे रहे हैं यह आज हमारे सामने चैलेंज है।

सवाल – राजाजी जैसा कि मेने स्वयं देखा सम्मेलन को लेकर बड़े स्तर पर व्यवस्थायें की गई थी, रहने खाने के सभी अच्छे प्रबंध थे, क्या सर्व सेवा संघ से उम्मीद किया गया था, आप इसे केसे देखते हैं ?

– इस नुकसान की भरपाई अब उन्हें करना होगा जिन्होंने माहौल बनाया सम्मेलन ना हो, हमने सर्व सेवा संघ से उम्मीद नहीं किया था कि वे लोग सारे कार्यक्रम के लिए आर्थिक सहयोग जुटायेगें। क्योंकि हमने यह जोड़ा था कि करीब 500 लोग सर्व सेवा संघ से सर्वोदय समाज के लिए आएंगे । व्यवस्था को थोड़ा बढ़ा दिया था हमने स्टॉल बढ़ा दिया था, खाने की व्यवस्था बढ़ा दी थी, हमने पंडाल को कुछ बड़ा बना दिया था, ठहरने की व्यवस्था कर लिया था तो हमें आर्थिक नुकसान हुआ इसकी भरपाई तो वह लोग करेंगे नहीं ।

लेकिन उन्हें सोचना चाहिए कि जो छोटे-छोटे संस्थाएं और संगठन अपने कंधे पर जिम्मेदारी उठाते है तो हम पूरे व्यापक संगठन की भलाई में अपने इतिहास को याद करने के लिए पूरे देश के लोगों को इक्ट्ठा करेंगे और उनको सबको स्थानमान देगें और उनको एक मंच देगें और हजारों लोगों को जोड़ेंगे तो मुझे लगता है कि जो आर्थिक नुकसान हुआ है और जो संगठनात्मक दृष्टि से जो नुकसान हुआ है उसकी भरपाई करने के लिए हैं वे लोग बाध्द हैं जिन लोगों ने नुकसान पहुंचाया है अब मेरी ओर से क्लेम नहीं है कि वे लोग हमको पैसा दे ।

लेकिन अगर उन लोगों को समझ में आता है कि 500 लोगों के एडिशनल व्यवस्था जो हुई उस व्यवस्था को ना इस्तेमाल करके कितना नुकसान हुआ होगा आर्थिक नुकसान हुआ होगा और आर्थिक नुकसान संगठन का नुकसान हुआ है सर्वोदय समाज का नुकसान है सर्वोदय आंदोलन का नुकसान है तो अपने संगठन को संगठनात्मक नुकसान पहुंचाएं अपने संगठन को आर्थिक नुकसान भी पहुंचाएं उसके बावजूद भी अपने आप को बहुत बहादुर समझ लें कि हमने बहुत बड़ा तोप मार लिया है तो यह संगठन के लिए घातक है।

और मैं सिर्फ एक मित्र के नाते उनको यह समझा सकता हूं कि वे लोग जागें इस समय, क्योंकि अहंकार की एक सीमा है अहंकार में आकर सब को तहस-नहस कर सकते हैं तहस-नहस करने का आनंद भी ले सकते हैं और जो यह तबाह करने का जो

आनंद है को आप लोग ले ही रहे हैं मैं कुछ दिनों से देख रहा हूं कि कुछ लोग संगठन को नुकसान पहुंचाने में संगठन के चीजों पर गलत तरीके से इस्तेमाल करने में और संगठन को अपने फायदे इस्तेमाल करने में और संगठन के बाकी लोगों को नकारने में और उनको सबको खराब साबित करने में जो लगे हैं वास्तव में पैर में कुल्हाड़ी मार रहे हैं और आज नहीं तो कल वह जागेगें ऐसा मैं मानता हूं।

सवाल – सर्व सेवा संघ से उम्मीद या आप अपने सुझाव व्यक्त करना चाहेगें ?

– मुझे बहुत खेद है, गहरा क्षोभ है मेरे मन में इस बात को लेकर। इतने बड़े मूवमेंट के समय क्या हो गया, जिस मूवमेंट के पास प्रधानमंत्री आते थे पूछने के लिए जिससे सलाह लेते थे जिसकी सहयोग से डाकू समर्पण होता था जिसके सहयोग से भू–दान का काम भी होता था जिसके सहयोग से नागालैंड का काम भी होता था ऐसे संगठन को कुछ लोगों ने अपने स्वार्थ के लिए तोड़–तोड़ के आज यहां लाकर खड़ा कर दिया है, काफी कमजोर स्थिति में लाकर खड़ा कर दिया है । तो इसलिए मुझे लगता है क्या एक तो पूरे संगठन को व्यापक संगठन को सोचना है कि इस प्रकार संगठन को नुकसान पहुंचाने वाले लोगों के साथ क्या व्यवहार करना चाहिए, कैसे उन लोगों से या तो संगठन को मुक्त करना चाहिए या तो उनको थोड़ा बहुत अनुशासित करना चाहिए।

दूसरा उन्हें स्वयं सोचना चाहिए क्या व्यक्तिगत लाभ ही सबसे बड़ा लाभ है, वित्तीय लाभ प्राप्त होने से कुछ प्राप्त हो गया क्या ऐसा आप मानते हैं कि आप ने व्यापक संगठन के हित में सोचना बिल्कुल भूल गए हैं उस दृष्टि से दोनों तरफ से होना है कि एक तो संगठनात्मक अनुशासन को एक व्यापक रूप से सोचना है और जो नुकसान पहुंचाने वाले लोग हैं उनको सोचना है कि किसका लाभ हो रहा है

आखरी बात मैं कहना चाहता हूं कि अभी देश के सामने बहुत चिनोती है एक मिनिस्टर से संवाद करना या न करना वगैरहा बहुत छोटी सी बात है वह कोई बहुत ज्यादा चर्चा के लिए विषय नही है, लेकिन आज जो देश के सामने स्थिति है वह गंभीर है और ऐसे गंभीर स्थिति में इस दुर्व्यवस्था से लड़ने के लिए एक ताकतवर संगठन चाहिए, तो यह चैलेंज यह है कि क्या सर्वोदय और गांधियन मूवमेंट इस प्रकार का एक औजार बनेगा क्या इनसे लड़ने के लिए मैं जानता हूं कि संस्थागत काम करने वाले लोग इसको करेंगे नहीं संस्था में जो बैठे हैं उनका काम सिर्फ विचार और प्रचार है वह आंदोलन नहीं है और वह आंदोलनात्मक काम नहीं है। आंदोलन का और व्यवस्था परिवर्तन का काम सर्व सेवा संघ का है, सर्व सेवा संघ एवं सर्वोदय समाज को इस काम में लगना चाहिए और आज की स्थिति में अगर पूरा समय हमारा आपस के मतभेद में और आपस की लड़ाई में खर्च करेंगे और कुछ लोग इस लड़ाई को ही मुख्य औजार मानकर अपने अस्तित्व को बढ़ाने में लगे रहेगें , इस प्रकार की लड़ाई चलाने में अपना भलाई है, इस प्रकार लड़ाकर रखो सबको ताकि हम काबिल दिखाई पड़े हम ताकतवर दिखाई पड़े वगैरह। क्या एक देश के सामने जो एक खतरा है उसको लेकर लड़ने की संगठन में तैयारी होगी या अपने–अपने स्वार्थ साधने के लिए संगठन का इस्तेमाल होगा यह सोचने का समय है।

सवाल – राजाजी आप सर्वोदय समाज के सर्वमान्य संयोजक हैं क्या आप अपने पद में बने रहना चाहेगें ?

– मेरा सर्वोदय समाज में संयोजक वगैरा बना रहना कोई महत्व की बात नहीं है। क्योंकि मैंने कभी उसके बारे में सोचा भी नहीं था मैंने कभी मांगा भी नहीं था कुछ साथियों ने कह दिया तो मैंने मान लिया। इसीलिए आवश्यकता कौन क्या रहेगा वगैरह नहीं है मेरे मन में संस्था को लेकर और पद को लेकर कोई आग्रह बिल्कुल नहीं है। मेने पिछले दिनों में कोशिश की है कि पदों से मुक्त हो जाए संस्थाओं से मुक्त हो जायें जहां–जहो से मुक्त होना बाकी है वहां से भी आने वाले साल भर में मुक्त हो जाऊंगा। लेकिन जरूरत व्यक्तियों का नहीं है व्यक्ति आएंगे जाएंगे अभी भाई जी युब्बाराव नही हैं उनका जो अपूर्ण कार्य है उसको कोई न कोई पूरा करेगा। जो तैयार होगा इस काम के लिए उसको आगे ले जाएंगे।
हमारे यहां सोचने वाले समझने वाले सब को जोड़ने वाले लोगों की कमी हो रही है और जिससे राजनीति में तोड़ने वाले तोड़–तोड़ कर अपनी राजनीति को चला रहे हैं वैसे अगर सामाजिक काम में भी, सर्वोदय के काम में भी, गांधी के काम में भी, अगर तोड़ने वालों की प्रमुखता हो जाए तो तोड़कर अपने आप को साबित करने वाले लोगों की भीड़ हो जाए तो यह दुर्व्यवस्था को लड़ने में विरोध में कोई नहीं होगा ।
इसलिए मित्रों व्यक्तिगत रूप से मत सोचिए कि राजगोपाल किस पद में है उनको सब पद से हटा दीजिए अलग बात है कोई किस पद में रहेगा वह ज्यादा महीने नहीं रहेगा ।

सवाल – अब आने वाले समय को आप मूवमेंट तौर पर आप केसे सोचते हैं ?

– मायने यह रखता है कि क्या हम लोग लोगों को, युवाओं को जोड़ेंगे क्या अपने स्तर से, कुछ सीखेंगे क्या, उससे ताकत लेंगे क्या और उस इतिहास से सीख कर युवाओं को जोड़कर हम अपने आप को एक नया मूवमेंट के रूप में खड़ा करेंगे क्या और उस मूवमेंट के माध्यम से व्यवस्था को चेलेंज करेंगे क्या,
ऐसे कुछ सवाल आज हमारे सामने हैं और उसको लेकर सबको विचार करना चाहिए कि यह जो हुआ है वह आई ऑपनर है ऑख खोलने वाला है,
यह समझने के लिए की कौन–कौन तत्व निरंतर इस कोशिश में है कि संगठन को तोड़कर अपने आप को साबित करें उन्हें यह समझने का समय आ गया है कि अपने खेल से मुक्त हो जाएं और सबके बारे में उल्टी सीधी बातें करना, सबको छोटा दिखाना, अपने आप को बहुत महत्वपूर्ण मानना यह सब करके संगठन को बहुत नुकसान पहुंचा रहे हैं तो यह संगठनात्मक काम में इस प्रकार के जो कैरेक्टर है इस प्रकार का जो चरित्र है वह बहुत नुकसान दाई है यह मैं कहना चाहता हूं।

सवाल – राजाजी जौरा में तीन दिन तक सम्मेलन चला और कई सत्रों में कार्यक्रम हुये , आप लोगों को अपना संदेश देना चाहेंगे ?

– मैं कहना चाहता हूं कि जौरा के सममेलन में 3 दिन के मंथन से बड़ी इंट्रेस्टिंग बातें आई हैं, बहुत अच्छी–अच्छी बातें आई हैं, आपको याद होगा कि पूरी चर्चा को बहुत व्यवस्थित रूप से ढांचा में डाल दिया गया था, कि पहले दिन उद्घाटन के बागी सम्मान के बाद एक पॉलिटिकल डायलॉग था, पॉलिटिकल डायलॉग में पूछ रहे थे कि 50

साल के बाद शांति और अहिंसा के काम को कैसे आगे ले जाएं ।

दूसरे दिन हम लोगों ने स्वराज्य पर बात किया, स्वाबलंबन पर बात किया, शिक्षा पर बात किया, कि कैसी शिक्षा होगी जो स्वाबलंबन और स्वराज को आगे बढ़ाएगी तो बहुत ही व्यवस्थित चर्चा रही है और चर्चा में मदद करने वाले लोग बहुत अच्छे अच्छे लोग पूरे देश से आए थे कुछ अंग्रेजी भाषा में बोलना पड़ा उसका अनुवाद हुआ तो उसके हिंदी अंग्रेजी सभी भाषाओं में लोगों ने अपने विचार को व्यक्त किया और पार्टिसिपेंट ने भी कंट्रीब्यूट किया ऐसा नही कि पूरा-पूरा भाषण रहा हो।

लोगों ने अपनी बात को पैनल में रखा खुली चर्चा हुई समय अभाव जरुर रहा है और आखिरी दिन हम लोगों ने वे-फॉरवर्ड किया तो यह वे-फॉरवर्ड क्या है हजार बच्चे, हजार युवाओं को हमने कहा कि आप लोग शाम के बाद बैठिये और चर्चा करिए की एक ऐसे अभियान को कैसे शुरु करें जिससे कि बापू को, गांधी को गरीबों तक पहुंचाया जाए इसलिए वंचितों के गांधी या गांधी और वंचित ऐसे टाइटल पर बात हुई पूरी चर्चा का करीब करीब निचोड़ वही आ रहा था।

सुधीर कुलकर्णी जैसे लोगों ने खुलकर उस डिस्कशन में बहुत मदद किया फिर आखिर में सब लोगों ने रात भर बैठ कर चर्चा की और आखिरी जो प्रेजेंटेशन दिया बहुत अच्छे प्रजंटेशन हुये। एक पैनल के सामने उन लोगों ने अपना प्रजेंटेशन किया। और उस पैनल को स्वयं रामधीरज भाई ने अध्यक्षता की जो उत्तर प्रदेश सर्वोदय मंडल के अध्यक्ष हैं।

तो मैं इस समय जरुर कहूंगा कि उत्तर प्रदेश सर्वोदय मंडल के अध्यक्ष और कुछ साथी लोग आए थे, उत्तराखंड के सर्वोदय अध्यक्ष आए थे तमाम प्रचार के बावजूद भी लोगों को यह लगा कि इस प्रचार में कोई दम नहीं है तो वे लोग उपस्थित रहे और अशोक शरण जी खुद उपस्थित रहे 2 दिन। पूरा समय रहा हर कार्यक्रम में रहा और कार्यक्रम की प्रशंसा भी किया उन्होंने जो सर्व सेवा संघ के ट्रस्टी हैं उनसे आप लोग पूछ सकते हैं तो कई लोग थे जो सर्वोदय से संगठनों से सीधे जुड़े हुये लोग जिनको इस बात से लेकर बुरा लगा कि इतने अच्छे एक अवसर को क्यों खो दिया हमने सिर्फ कुछ मनचले लोगों की बातों में आकर हमने बहुत बड़ा अवसर खो दिया ऐसा लोगों ने महसूस किया कि इतना अच्छा माहौल था पूरा डिस्कशन का ।

सवाल – राजाजी सम्मेलन के आखिरी दिन मंथन से वंचितों के गॉधी अभियान की शिरुवात की बात निकलकर आई है

– हॉ, अब यह कोशिश है कि जो वंचितो का गांधी है इस अभियान को आगे कैसे ले जाए उसके पीछे तर्क यह है कि आखिर अंतिम व्यक्ति गांधी की तलाश में अभी भी है गांधी को बहुत आसानी से स्वीकार करते हैं बाकी लोगों को बहस करने का टाइम है उनका पेट भरा हुआ है तो उसमें कोई दिक्कत नहीं है तो अंतिम व्यक्ति जिसको गांधी की जरुरत है अंतिम व्यक्ति जो गांधी के प्रति हैं जो अभी भी राजनीतिक पार्टियों के रडार से दूर हैं इसीलिए हमने तय किया है कि वंचितों का गांधी जैसा एक अभियान अब शुरु होना चाहिए और उसमें आप सब को भाग लेना चाहिए तो उस दिशा में अभी काम जारी है और वहां से जो जो रिपोर्ट आएगा सम्मेलन का उसमें आपको बात समझ में आएगा तो आप लोग भी इसमें भाग ले सकते हैं भले ही सर्वोदय समाज सम्मेलन नहीं हुआ तो कोई बड़ी बात नहीं है बात है कि क्या आउटकम रहा सम्मेलन का।

सम्मेलन में एक बहुत बड़ी बात यह हुई कि वंचितो की समस्याओं को गांधीजी के तरीके से हल करने की बात और इसको देखिए बहुत अच्छी बात हुई और बहुत सारे कलाकार लोग आए थे उन्होंने गांधी जी की बहुत अच्छी रचनाएं की हैं और लोगों को सुनाया और बहुत लोगों ने युवाओं ने गांधी पर अपने विचार रखा तो कुल मिलाकर सम्मेलन को कोई नुकसान नहीं हुआ सम्मेलन अच्छा रहा सम्मेलन से जो उम्मीद था वह हमने उपलब्ध की लेकिन सिर्फ इतना हुआ कि सर्वोदय समाज सम्मेलन के नाम से यह चला नहीं पाया क्योंकि कुछ लोगों का पूर्वाग्रह ताकि उस प्रकार इसको चलने नहीं देना है तो उनको धन्यवाद क्योंकि आपने अपने उद्देश्य में सफलता प्राप्त की और बाकी लोगों को भी धन्यवाद क्योंकि कुछ लोगों के दुराग्रह के बाद भी बाकी लोगों ने बहुत तन मन धन से ठीक किया और बहुत बढ़िया रहा।

आज मैं इन सबको धन्यवाद पत्र लिख रहा था तो मैंने सबको धन्यवाद कहा। जौरा के लोगों ने हाथ में उठा लिया सबको। जिस प्रकार प्रकार की रैली रही जो नए गांधी आश्रम से समर्पण स्थल तक का और उसमें पूरे जौरा का उत्साह दिख रहा था तब आपको मालूम पड़ता है कि सुब्बाराव जी के प्रति, गांधीजी के प्रति और आश्रम के प्रति लोगों के मन में कितनी श्रद्धा है और बहुत लोगों ने चंदा दान किया बहुत ज्यादा तो इक्ट्ठा नहीं कर पाए लेकिन अभी भी चार–पॉच लॉख रुपये का कमी है उसको तो हम पूरा करेंगे ही लेकिन बहुत लोगों ने दिल खोलकर साथ दिया ।

गेहूँ दिया, चावल दिया और बहुत प्रकार की चीजें दी और बहुत लोग वॉलिंटियर के रूप में काम किया पूरे देश के लोग आए थे जो दिन रात काम करके वह जगह को इतना सुंदर बना लिया । भाई जी का समाधि बनी हुई है भाई जी की समाधि का उद्घाटन हुआ और एग्जीबिशन लगा हुआ है एक प्रकार का प्रेरणा स्थल है आज भी याद है। भाई सुब्बाराव जी का भी याद है और कितने लोग वहां आए हैं याद है मुझे अभी भी याद है समर्पण के समय कौन नहीं आया होगा ।

नारायण भाई जैसे व्यक्ति हमारे आश्रम में दो कमरा था इसलिए लोग वहां बबूल के पेड़ के नीचे इतनी धूप में बैठकर समय बिताया तो मुझे याद है कि बहुत लोगों का कॉन्ट्रिब्यूशन इस काम में रहा है और उनको सबको हमने आभार व्यक्त किया उस समय। बागी लोग जो जीवित उसमें से 30 लोग आए सब लोग बहुत प्रसन्न होकर गए आज भी समस्या है लोगों की जमीन मिलना बाकी है तो अच्छी नहीं है और जो जमीन मिला तो उस पर किसी का कब्जा कियाा हैं उसको दिला दीजिए वगैरा उनकी अपनी समस्याएं है। भूदान की समस्या बहुत है जिसको पूरा करना है हमारी जिम्मेदारी है जहां गौरंग भाई, राम धीरज भाई और अरुण भाई हम सब बैठकर यही सोच रहे थे कि समस्या को समाधान ढूंढना है वैसे ही बागी समर्पण के बाद भी ऐसा नहीं कि सब समस्याएं हल हो गई हैं अभी समस्या हल होना है अभी तो सिर्फ जोरा सम्मेलन हुआ है अभी तो बटेश्वर सम्मेलन होना बाकी है। तालाबशाही राजस्थान में सम्मेलन होना बाकी है यह तो चलता रहेगा सारे काम हमारा काम है।

कुछ लोगों के नाराज होने से काम रुक नहीं जाते हैं अच्छा होता कि हम सब लोग साथ हैं हम सब लोग एक साथ मिलकर यह सब करें और अपने संगठन को और ताकतवर और लोगों को जोड़ें और लोगों को कुछ दिन बाद चले जाएंगे संगठन बढ़ेगा इससे और संगठन बढ़ने के साथ–साथ इस देश की व्यवस्था है लड़ने के लिए बड़ी ताकत

होगी और वह हमारा कॉन्ट्रीबूशन होता। अभी तो कॉन्ट्रीबूशन यही है कि कुछ होने ही नही दो, जहां–जहां कुछ होने की संभावना है उसको कैसे रोका जाए उसको कैसे तोड़फोड़ किया जाएगा यही भावना है तो यह दुर्भाग्य होगा ऐसा मैं मानता हूं ।

तो जौरा के लोगों के लिए धन्यवाद है और वॉलिंटियर को धन्यवाद है सर्वोदय गांधी संस्कृति से जो लोग आए उनको सबको धन्यवाद है पूरे देश के युवा लोग हैं उनको धन्यवाद है और आश्रम के साथियों ने खूब मेहनत किया उनके सब के प्रति आभार है और बहुत लोगों ने आर्थिक सहयोग दिया उनके प्रति आभार है हमारा सर झुका हुआ है आभार से क्योंकि इतने लोग दिल खोलकर मदद करते हैं।

तो छोटी मोटी कमियां और छोटे–मोटे दुष्प्रचार मायने नहीं रखते हैं फिर भी मैंने सोचा कि इस चर्चा के माध्यम से कुछ बातों को साफ कर दू ताकि कोई भ्रम में ना रहे हैं क्योंकि भ्रम है कि कुछ लोगों ने मिलकर मेरे को दबाव डालकर रद्द कर दिया नहीं ऐसा भ्रम मत चलाइए और कुछ लोगों के ना आने से सम्मेलन नहीं हुआ अच्छा नहीं हुआ है भ्रम है, बहुत अच्छा सम्मेलन हुआ सब कुछ बढ़िया हुआ कोई किसी को कमी महसूस नहीं हुई तो इसलिए हम लोगों को नुकसान हुआ, संगठन को नुकसान हुआ। मुझे उम्मीद है आगे जो भी जिम्मेदारी लेकर इस प्रकार का काम करेंगे समाज सेवा संगठन का उनको सबका सहयोग मिले ताकि वह अपने काम को अच्छे से मिलकर करके संगठन को आगे बढ़ा सके और कुछ लोगों को नुकसान होता है अपनी व्यक्तिगत थोड़ा बहुत लगता है कि मेरा महतव कम हो रहा है अपने अंदर झांककर देखें कि आपका बड़प्पन इसमें है कि आपका नाम हो जाए और आपको सब लोग पूछें कि आप के बड़प्पन में है कि आप बड़े संगठन का भाग हैं बड़े–बड़े बरगद के नीचे बैठने का एक अलग आनंद है बबूल का पेड़ खड़ा हूं यह कहने का है आनंद अलग है। उम्मीद करुंगा कि हमारे साथी लोग भी पूर्वाग्रह से ग्रसित हैं और अपनी कलम और अपने जुबान इस प्रकार चलाते है कि कटुता पैदा हो, वह अपने आप को बदलें संगठन के हित में देश के हित में । यही मेरा कहना था ।

मुझे उम्मीद है आप सभी इस खास चर्चा को सही कृत में लेंगे सही तरीके से लेंगे, ताकि कोई मन में कोई दुर्भावना ना हो।

धन्यवाद